



“चरन धूड़ि”

- “आदि गुरए नमह । जुगादि गुरए नमह । सतिगुरए नमह ।
श्री गुरदेवए नमह ।”

दास दोनों हथ जोड़ के संगत दे चरना विच मत्था
टेकटे होये, आपणे गुनाहां दी माफी लई अरदास बेनती करदा
है । संगत दी समर्था है बक्षण दी कृपालता करो । संगत दे
बक्षी होये नूं गुरु साहब वी बक्षा देंदे हन ।

- “हरि के नाम की मन रुचै । कोटि साति अनंद पूर्न जलत
थ्रती बुझै । रहाउ ॥ सतं मारगि चलत प्रानी पतित उधरे
मुचै । रेनु जन की लगी मस्तकि अनिक तीरथ सुचै ॥1।
चरन कमल धिआन भीतरि घटि घटहि सुआमी सुझै । सरनि
देव अपार नानक बहुरि जमु नही लुझै ॥2।”
(5-1122)
- “ताका दरसु पाईए वडभागी । जा की राम नामि लिव लागी
॥। जाकै हरि वसिआ मन माही । ता कउ दुखु सुपनै भी
नाही॥। रहाउ ॥ सरब निथान राखे जन माहि । ता कै सगि
किलविख दूखु जाहि ॥2। जन की महिमा कथी न जाई ।
पारब्रह्मु जनु रहिआ समाई ॥3। करि किरपा प्रभ विनउ
सुनीजै।दास की थूरि नानक कउ दीजै।”
(5-193)
- “दुख विचि जमै दुख मरै दुख विचि कार कमाई । गरभ
जोनी विचि कदे न निकलै विस्टा माहि समाई । धिगु धिगु
मनमुखि जनम गवाइआ । पूरे गुर की सेव न कीनी हरि का
नामु न भाइआ ॥। रहाउ। गुरु का सबदु सभि रोग गवाए
जिसनो हरि जीउ लाए । नामे नामि मिलै वडिआई जिसनो
मनि वसाए ॥2। सतिगुरु भैटै ता फलु पाए सचु करणी सुख
सारु । सै जन निरमल जो हरि लागे,हरि नामे धरहि पिआरु
॥3। तिन की रेणु मिलै तां मस्तकि लाई जिन सतिगुरु पूरा

थिआइआ । नानक तिन की रेणु पूरे भागि पाईऐ जिनी राम
नामि चितु लाइआ ।५।” (3-1130-1131)

“गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु थूरि साथू की
ताई । किलविख मैलु भरे परे हमरे विचि हमरी मैल साथू
की थूरि गवाई । ॥ तीरथ अठसाठि मजबु नाई । सत संगति
की थूरि परी उडि नेत्री सभि दुरमति मैल गवाई । ॥ रहाउ ॥
जाहरनवी तपै, भागीरथि आणी, केदार थापिओ महसाई ।
कासी क्रिसनु, चरावत गाऊ, मिलि हरि जन सोभा पाई । २।
जितने तीरथ देवी थापे, सभि तितने लोचहि थूरि साथू की
ताई । हरि का संतु मिलै गुर साथू लै तिस की थूरि मुखि
लाई । ३। जितनी सिसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै
थूरि साथू की ताई । नानक लिलाटि होवै जिसु लिखिआ
तिसु साथू थूरि दे हरि पारि लंधाई ।५।” (4-1263)

(पाठी माँ साहिबा)



अज दे इस रुहानी सत्संग लई गुरु साहबां ने
जो शब्द बकरीश कीता है । ओ है “चरन थूँडि ।” “हरि के
नाम की मन रुचै ।” ऐ मन दी रुचि अगर हरी दे नाम दे नाल
हो जावे । इस वक्त इस दी रुचि जगत दे विच, ज़़़ वस्तुयां दे

नाल और सम्बन्धा दे विच है । कहदें ने अगर ऐ भावना पलट जाये । ऐ रुचि पलट जाये नाम दे प्रति रुचि हो जाये आसक्ति हो जाये कहदें ने कोटि साति करोड़ां ही शातियां मिल जादिया ने । कदों जदों ऐ मन निश्चल हो जांदा है । अनद पूरन पूर्ण आनन्द दी अवस्था प्राप्त होंदी है । इन्हां तिनां लोकां दे विच पूर्ण आनन्द है ही नहीं जिन्हां नूं असी सुख और आनन्द कह करके एकत्रित कर रहे हाँ । इन्हां दा अंत सिर्फ दुख - दुख और दुख है होर कुछ वी नहीं है तां गुरु साहब उपदेश करदे ने । अज दे इस मजमून दे विच इसनूं चरन - धूङ्गि कह करके गुरु साहबां पुकारिया है । “चरण धूङ्गि तेरे जन की होवां तेरे दर्शन कउ बलि जाई ।” गुरु साहब उपदेश करदे ने कि तेरे जन जेडे ने केडे जन ! जिन्हां दी रुचि इस परमात्मा दे प्रति हो गई उसदे नाल प्यार हो गया यानि के नाम दे नाल जुँ गये उन्हां दी धूँ बण जावां और तेरे दर्शनां ते कुर्बान चली जावां । ऐ जीवात्मा दी फरियाद है पर इक तरीके दे नाल ऐ विचार करन वाली गल है कि चरन धूङ्गि केड़ी है । जेड़ी चरन - धूङ्गि असी इस जगत दे विच अर्थ लै करके बैठे हाँ इस धूँ दे नाल अज तक किसे दा उद्धार नहीं होईया । ऐ सारा भ्रम है किस ने फैलाया ! मन ने । ऐ जितने वी चरन धूङ्गि दे मुतलक बाणी दे विच शब्द उच्चारे गये ने और मस्तक दे नाल लाण

ਦੀ ਗਲ ਕਹੀ ਗਈ ਹੈ ਏ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਗਲ ਹੈ ਓਦੇ ਨਾਲ
ਕੁਛ ਲਫਜ ਏ ਵੀ ਇਸ਼ਟੇਮਾਲ ਕਿਤੇ ਗਿਆ ਜੇ ਵਡਭਾਗੀ, ਪੂਰ੍ਣ ਕਰਮ
ਧੁਰਿ ਮਸ਼ਤਕ ਲਿਖਿਆ ਲਿਲਾਟ । ਏ ਤਿਨ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਭਰਮਾਰ ਹੈ
ਚਰਨ ਥੂਡਿ ਦੇ ਨਾਲ ਝਨਹਾਂ ਤੁਕਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਇਸ਼ਟੇਮਾਲ ਕਿਤਾ ਹੁਣ
ਵਿਚਾਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹਿਦਾ ਜੇਡੀ ਚਰਨ - ਥੂਡਿ ਦਾ ਅਰਥ ਅਖੀ ਲੈ ਕਰਕੇ
ਬੈਠੇ ਹਾਂ ਚਰਣ ਕਿਆ ਹੈ ! ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਯਾ ਉਨਹਾਂ ਦੇ ਸ਼ਿ਷ਿਆ ਜੇਡੇ ਕਿ
ਪੂਰੇ ਹੋ ਗਿਆ ਉਨਹਾਂ ਦੇ ਚਰਣ ਉਨਹਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਲਗੀ ਹੋਈ ਰੇਤ ਧਾਨੀ ਕੇ
ਮਿਟ੍ਰੀ ਇਸਨੂੰ ਚਰਨ ਥੂਡਿ ਕਹ ਕਰ ਕੇ ਅਖੀ ਏ ਅਰਥ ਕਡ ਕਰ ਕੇ
ਕੀ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਓਥੇ ਮਤਥਾ ਟੇਕਦੇ ਹਾਂ ਵਿਚਾਰ ਕਰਕੇ ਦੇਖੋ ਜਿਸ
ਜਗਹ ਤੋਂ ਏ ਜਨ ਨਿਕਲ ਗਿਆ ਉਸ ਜਗਹ ਤੋਂ ਅਖੀ ਥੂਡਿ ਧਾਨੀ ਕੇ
ਮਿਟ੍ਰੀ ਏਕਨਿਤ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ । ਕਿਆ ਅਖੀ ਵੱਡੇ ਭਾਗਾਂ ਵਾਲੇ ਹੋ
ਗਿਆ ਅਜ ਤਕ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਮੁਕਤਿ ਨਹੀਂ ਮਿਲੀ ।
ਏ ਮਿਟ੍ਰੀ ਹੈ ਔਰ ਮਿਟ੍ਰੀ ਹੀ ਰਹੇਗੀ ਅਗਰ ਏ ਮਿਟ੍ਰੀ ਅਖੀ ਮੁਹਾਂ ਤੇ ਮਲ
ਲਈ ਤੇ ਮਲਣ ਦੇ ਬਾਦ ਸ਼ੀਸੇ ਵਿਚ ਅਖੀ ਆਪਣੀ ਸ਼ਕਲ ਦੇਖ ਸਕਦੇ
ਹਾਂ ਕਿ ਹੋਰ ਕਿਤਨੀ ਇਕ ਸੁਨਦਰ ਹੋ ਗਈ ਹੈ । ਹੁਣ ਵਿਚਾਰ ਕਰਕੇ
ਦੇਖ ਲੋ ਏ ਸ਼ਕਲ ਹੀ ਇਸਨੇ ਕੁਰਬਾਨ ਕਿਥੋਂ ਕਿਤੀ ਹੈ ! ਤੇ ਏ ਆਤਮਾ
ਨੂੰ ਕਿਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਨਿਮਾਣੀ ਦੀਨ ਯਾ ਕਿ ਉਜ਼ਜਵਲ ਕਰ ਦੇਗਾ
। ਉਸ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਦਰਗਾਹ ਦੇ ਵਿਚ ਮਿਲਣ ਦੇ ਕਾਬਿਲ ਬਣਾ ਦੇਗੀ
ਏ ਮਿਟ੍ਰੀ । ਸੋ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਉਪਦੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹੈ ਰੁਹਾਨਿਧਿ ਦਾ ਜੇਡਾ
ਮਜਮੂਨ ਹੈ । ਇਸ ਚਰਨ ਥੂਡਿ ਦੀ ਸਾਰੇ ਜਗਤ ਨੂੰ ਵੀ ਲੋੜ ਹੈ ।

यानि के संता दी जेडी धूड़ि है ओ सारी जगत मंगदा है बिना
इस धूड़ दे, इस जगत दे जीवां दा उद्धार हो ही नहीं सकदा ।
बेशक मनुखे जन्म विच पूर्ण उद्धार है पर बाकि सृष्टि दी ऐ
जितनी वी सम्पदा नजर आ रही है ऐ जड़ चेतन लोक दी
बेशक जिन्हें (जिसने) सारा खत्म हो जाणा है पर उसनूं वी
इस चरन धूड़ि दी लोड है । सो ऐ चरन धूड़ि केड़ी है ऐ
रुहानियत दे विषय दे विच अगर विचार कर के देखिये आपणे
सतिगुरां नूं अगर असी नाल बिठा लईये ते फिर ओ अर्थ सानूं
देंदे जाणगें फिर ऐ सारा मजमून स्पष्ट हो जांदा है कि केड़ी
धूड़ दी इस जगत नूं लोड है यानि के इक मिट्टी तत्व दी लोड
है या पूर्ण पंज तत्वां तों परे ओ परमात्मा ओ उसदा गुण जिसनूं
कि नाम या शब्द कह कर के संता ने पुकारया है उसदी लोड
है । ते संता दी धूड़ केड़ी है पहले ते असी संत दी परिभाषा
देखणी है संता दी परिमाशा असी की कडी है इक आकार नूं
इक विशिष्ट आकार नूं जितने वी मत - धर्म इस जगत दे
विच चल रहे ने सारेयां दे विच जिनां नूं वी असी मुख्य आधार
बणा रखया है उन्हां दा नाम असी संत रखया है गुरु रखया है
ऋषि - मुनि रखया है या इसी तरीके दे नाल होर लफजां दे
नाल असी उन्हां नूं याद करदे हां ते जिस घट दे विच कोई
ताकत कम कर रही है पूर्ण रूप दे विच असी उस तक नहीं

ਪਹੁੰਚ ਸਕਦੇ ਨ ਉਸਦਾ ਸਾਨੂੰ ਖ਼ਾਲ ਹੈ ਅਥੀ ਉਸ ਘਟ ਨੂੰ ਹੀ ਗੁਰੂ, ਪਰਮਾਤਮਾ, ਈਸ਼ਵਰ ਯਾ ਸਤਿ - ਸਤਿਗੁਰੂ ਕਹ ਕਰ ਕੇ ਧਾਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ ਯਾਨਿ ਇਤੇ ਹੀ ਅਥੀ ਫੇਲ ਹੋ ਗਿਆ । ਇਕ ਤੇ ਅਥੀ ਗੁਰੂ ਦੀ, ਸਤਿ ਦੀ ਅਥੀ ਪਰਿਆਖਾ ਕਡੀ ਸੀ ਓਗ ਗਲਤ ਹੋ ਗਿਆ ਜਦ ਆ ਹੀ ਗਲਤ ਹੋ ਗਿਆ ਤੇ ਯਾਨਿ ਉਨਹਾਂ ਦੀ ਦੂਜੀ ਪਰਿਆਖਾ ਜੇਡੀ ਉਨਹਾਂ ਦੀ ਮਿਟ੍ਰੀ ਦੀ ਸਾਰੇ ਜਗਤ ਨੂੰ ਲੋੜ ਹੈ, ਮਸਤਕ ਤੇ ਲਾਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਤੇ ਜਦ ਪਹਲੀ ਪਰਿਆਖਾ ਅਧੂਰੀ ਹੈ ਤੇ ਦੂਜੀ ਕਿਵੇਂ ਪੂਰੀ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ ਯਾਨਿ ਕੇ ਉਨਹਾਂ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਲਗੀ ਜੇਡੀ ਮਿਟ੍ਰੀ ਜਿਸ ਜਗਹ ਤੋਂ ਲਾਂਘ ਗਿਆ ਉਸ ਜਗਹ ਤੇ ਮਤ੍ਥੇ ਟੇਕ ਦਿਤੇ ਉਸ ਮਿਟ੍ਰੀ ਨੂੰ ਅਥੀ ਚੁਕ ਕਰਕੇ ਘਰ ਲੈ ਆਏ ਬੱਡੇ ਸ਼ਰਮ ਦੀ ਗਲ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਸਮਾਂ ਵੀ ਇਸ ਜਗਤ ਦੇ ਵਿਚ ਇਕ ਵਿਸ਼ਿ਷ਟ ਧਰਮ ਚਲ ਰਹਾ ਹੈ ਉਸ ਦੇ ਵਿਚ ਕੀ ਕਿਤਾ ਜਾ ਰਹਾ ਹੈ ਕਿ ਝਾਡੂ ਲਗਾ ਕਰਕੇ ਸਾਂਗਤ ਜੇਡੀ ਹੋਂਦੀ ਹੈ ਓਗ ਮਿਟ੍ਰੀ ਇਕਟ੍ਰੀ ਕਰਕੇ ਪੁਡਿਆਂ ਬਣਾ ਕਰਕੇ ਵਡਿਆਂ ਜਾ ਰਹੀ ਨੇ ਇਤਨੀ ਵਡੀ ਮੂਡਮਤ ਹੈ ਕਿਤਨੀ ਵਡੀ ਮੂਰਖਤਾ ਹੈ ਇਸ ਮਿਟ੍ਰੀ ਦੇ ਨਾਲ ਕਰਦੇ ਕੀ ਨੇ ਕੋਈ ਚਟਦਾ ਹੈ, ਕੋਈ ਸ਼ਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ ਕੋਈ ਦੁਖ ਯਾ ਰੋਗ ਲਗੇ ਨੇ ਉਨਹਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਦਾ ਉਪਾ (ਉਪਾਧ) ਕਰ ਰਹੇ ਨੇ । ਯਾਨਿ ਕੇ ਓਗ ਅਰਥ ਹੀ ਗਲਤ ਕਡਿਆ ਸੀ ਤੇ ਦੂਰੇ ਤਰੀਕੇ ਦਾ ਕਡਿਆ ਹੋਈਆ ਅਰਥ ਕਿਸ ਤਰਹ ਪੂਰਾ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਯਾਨਿ ਕੇ ਸ੍ਰਾਵਿ ਜੇਡੀ ਹੈ ਅਂਧਕਾਰ ਦਕ ਵਿਚ ਗੱਕੇ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ । ਪਹਲਿਆਂ ਰਹਾਂ ਕਿਤੇ ਗਿਆਂ ਯਾਨਿ ਕੇ ਅਂਧੇ ਖੂਹ ਦੇ ਵਿਚ ਗਿਆਂ ਕਿਸੀ ਨੇ ਸੋਚਣ ਦੀ ਵਿਚਾਰ

करन दी कोशिश ही नहीं किती लाईन लगी होई है दौड़दे होये
जा रहे ने अंधे खूँह विच गर्क हो रहे ने । लाईन केड़ी लगी है
भाई नाम मिलदा पेआ है ओदे नाल की फायदा होंदा है, काल
दे मुहं विचों बच जादे हां जी मुक्ति मिल जांदी है बड़ा सस्ता
सौदा है असी वी लाइन विच लग के लै आये जी की लै आये
नाम लै आये हां और की हो गया मुक्ति हो गई । यानि के न
नाम नूं समझया न ओदे अर्थ नूं समझया और जिन्हां नूं लै
करके आये हां उन्हां नूं जपण लई इक चेतन सता दी लोड है
और विचार करके देख लो उन्हां नूं असी नाम समझ करके,
मुक्ति समझ करके बैठे हां बैठे काल दे मुहं विच हां साडे
आपणे जन्म पक्के कीते जा रहे ने दिन - रात जेडी क्रिया
असी अपना रखी है ऐदे नाल साडे अगले जन्म पक्के हो रहे
ने और दूसरे पासे असी समझ करके बैठे हां नाम दान सानूं
मिल गया । चरन - धूँड़ि सानूं मिल गई साडी तां मुक्ति निश्चित
हो गई हुण कितना वट्टा भ्रम इस जगत दे विच फैलया होईया
है असी किस नाम समझ रहें हां । गुरु साहबां ने संता दी रैन
समझ के पुकारिया है जिसदी सारे जगत नूं लोड है और किसी
विरले भागां वाले नूं ही ऐ रैन प्राप्त होंदी है धूँड़ प्राप्त होंदी है
तां सत्संगत विच केड़ी धूँड़ निकलदी है ऐ जेडी चरनां दे नाल
मिट्टी धूँड़ लगी होई है इस रैन दी तरफ कदी वी गुरु साहबां

ने, सत्ता इशारा नहीं कीता । ऐ भेद है ऐ समझण वाली गल है कि सत्संगत विच नाम दी धूङ पैदा होंदी है नाम दा धूङ मिलदी है । हुण नाम किथे है नाम ते सारे जड़ चेतन सब नूं आधार दे रहा है । नाम दी इस धूङ ने सारे मुल्कां नूं आधार दे रखया है पर ऐ मिलदा किथे है ऐ धूङ मिलदी किथे है ऐ दसवें द्वार विच । मनुखे जन्म विच ऐ नौ द्वारां विच धूङ नहीं मिलदी ऐ दसवें द्वार मिलदी है ते फिर ऐ सत्संगत दे विच क्यों कहा जांदा है कि नाम दी धूङ मिलदी है । हुण विचार करना पयेगा कि इत्थे केड़ा नाम है और केड़ी धूङ सानू मिलदी है सचखण्ड तों इस वक्त जेड़ी बाणी सानूं मिल रही है ऐ सारी बाणी ऐ लफज नाम दी धूङ है ऐ सारे लफज नाम कहलादें ने इन्हां नूं नाम क्यों कहा है क्योंकि इन्हादे विच निर्देश है हुक्म है ताकत है मन नूं मारन दी और इस रस्ते ते चलाण दी जेड़ी जीवात्मा ने कमर कस लई इस नाम नूं अपना लेआ इस धूङ नूं मस्तक ते लगा लेआ मस्तक दा की भाव है मस्तक ते मन बुद्धि और आत्मा इन्हां तिनां दी बैठक है । ऐ दोनां अखां दे विच दसवे द्वार ते इस करके कहा गया है कि इन्हां तिनां ने इस धूङ दे नाल लगणा है इस नाम नूं अपनाणा है तां नाम कोई लफज नहीं है इसनू अपनाणा यानि के इक क्रिया । जिस लफज नूं नाम कहा है ऐ इक क्रिया है इस क्रिया नूं

अपनाण वास्ते उपदेश दिता है । मस्तक ते लाण दा भाव है
इस नाम दे ऊपर लिखे होये निर्देश अनुसार इस क्रिया नूं
अपना ले ऐ ते है सत्संगत दी चरन धूङ्गि । जेझी कि असी मिट्टी
समझ के मुहं ते मल रहे हाँ इसदे नाल करुप हो जावागें सरुप
नहीं हो सकदे । अगर ऐ नाम दी धूङ्गि इस वक्त साडिया
झोलियाँ विच तकसीम हो रही है इसदी अगर पुङ्गी बणा करके
असी घर लै गये । इसनूं अगर असी चट लेआ ते याद रखणा
ते फिर सानू जन्म और मरण दे गेड़ दे विच नहीं आणा पयेगा
असी पारब्रह्म ईश्वर सतिगुरु दे अन्दर ही समाँ जावागें क्यों !
क्योंकि इस वक्त उस सतिगुरु दी जो सचखण्ड दे विच मौजूद
ऐ बाणी दे रेहा है आपणी चरन - धूङ्गि दे रूप दे विच ऐ लफज
दे रूप दे विच सानू मिल रही है और इन्हाँ नूं अपना लैणा ही
ऐ धूङ्गि नूं आपणे घर लै जाणा है ताँ संता दी धूङ्गि दी अगर असी
ख्वाहिश रखदे हाँ उस दे नाल जुड़ना चाहदें हाँ ओ मस्तक ते
लगाणा चाहदें हाँ ते इस मन बुद्धि और आत्मा नूं इस दे नाल
जोड़ लैणा इसनूं चट लैणा यानि के इस दे ऊपर जो निर्देश है
उस दे ऊपर आपणी हस्ती नूं मिटा देणा । ऐ है सत्संगत दी
नाम दी धूङ्गि और असली जेझी धूङ्गि है नाम दी ,नाम किथे
मिलदा है ओ अंतर दे विच मिलदा है बहुत सारीयाँ तुकाँ जे
जिस दे विच दर्शन दी वी गल कीती है जिस तरह इस तुक

विच वी स्पष्ट कीता गया है कि दर्शन दी सानूं लोङ है चरन धूङ्गि तेरे जन की होवा तेरे दर्शन कोउ बलि जाई । ते हुण चरन धूङ्ग बणना चाहदी है जीवात्मा ते क्या इस शरीर दे टुकड़े करके संता दे चरना दे हेठ बिठाण दी गल कीती गई है ते नहीं । ऐ सारा भ्रम है ते फिर केड़े दर्शन दी गल कीती गई है ।

“सतिगुरु नौ सभ कउ वैखदा जैता जगत संसारि डिठै मुकति ना होवई जिचर सबदि न करे वीचारु ।” हुण इस तुक दे विच बिल्कुल स्पष्ट है कि अस्यी दर्शन नूं मुक्ति समझ रहे हाँ सतिगुरु नूं पूरा जगत देख रेहा है जड़ वस्तुया देख रहे ने, पशु परिन्दे देख रहे ने मनुखे जन्म ने देख लेआ ते केड़ी वट्ठी गल हो गई कहदें ने डिठै मुकति सिर्फ देखण दे नाल अगर अस्यी कहिये कि साडी मुकति हो जाये ते नहीं होयेगी । क्या ऐ परिन्दे छुट गये, क्या पशु नहीं फिर रहे ने क्या इन्हाँ ने सतिगुरु दे दर्शन नहीं कीते क्या ऐ छुट गये ने अगर ऐ नहीं छुटे ते याद रखणा अस्यी वी नहीं छुटाएं क्योंकि अज तक इस मनुखे जन्म दा सार्थक भुगतान नहीं कर सके । जीवात्मा इस पिंजरे दे अन्दर मौजूद है अस्यी क्यों नहीं छुटदे अजतक गुरु साहबाँ ने बाणी उच्चारी है पर अस्यी उन्हाँ दे अर्थ गल्त कडे ने कहदें ने जिचर सबदि न करे वीचारु । शब्द केड़ा है इत्थे अन्दर दे शब्द दी गल नहीं कीती इत्थे जेड़ा शब्द इस वक्त साडियाँ झोलियाँ

विच चरन धूड़ि दे रुप दे विच तकसीम कीता जा रेहा है इक
शब्द दी गल कीती जा रही है । जिस वक्त जीवात्मा इस शब्द
नूं अपना लैंदी है विचार दा भाव अपना लैंदी है । विचार ही
करदे रह गये सोचदे ही रह गये कि अच्छ की है गन्दा की है
। सत्संग सुणदे ही रह गये बाणी पढ़दे ही रह गये ते जीवात्मा
दा उद्धार नहीं होयेगा ते दोनो ही गलां स्पष्ट ने न ते चरनां दी
मिट्टी दे नाल जीवात्मा दा उद्धार हो सकदा है न सतिगुरु दे
दर्शन दे नाल उद्धार हो सकदा है इसदा ऐ वी अर्थ नहीं है कि
असी दर्शन नहीं करने । असी निमाणे नहीं होणा सतिगुरु दे
चरनी नहीं लगणा दोनो ही अर्थ जेडे ने सीमित लैके आंदे ने ।
व्यापक अर्थ जेडा है ओ जीवात्मा नूं अंतर लै जाण दा उपदेश
देंदा है कि इस जगत दे विचों निकल संसार दी तूं जेडी रुचि
बणा रखी है उस रुचि नूं त्याग । जड़ वस्तु और सम्बन्धां दी
रुचि विचों निकल उस परमात्मा दे नाल रुचि कर । परमात्मा
किथे है परमात्मा कोई आकार नहीं है रंग,रूप,रेख आकार दी
कोई नहीं है ओ परमात्मा दा इक गुण है जिसनूं नाम केहा
गया है नाम दे अन्दर की है प्रकाश है इक आवाज है । ऐ
प्रकाश और आवाज जेडा है ऐ मन बुद्धि और इंद्रियां दी सीमा
तों परे दी गल है यानि के इन्हां दे नाल असी परमात्मा नूं प्राप्त
कर ही नहीं सकदे और अज तक असी जितनी वी क्रिया अपना

रखी है । की है ! इन्हां मन बुद्धि और इंद्रियां दे अर्थीन ही
अपना रखी है जैसा मन ने उपदेश दिता जैसा अवतारां ने रस्ता
दिखाया असी उन्हां दे मगर लगे हां ओ खुद आवागमन दे विच
है नर - नरायणी - देह अगर ऐ देह नर जेड़ी है नारायण बनण
दे काबिल है ते फिर देवी - देवता किस काबिल ने यानि के
ओ वी तरस रहे ने इस नरायण बणन वास्ते इस नर दी देह नूं
कि इस नर देह नूं प्राप्त करके असी नरायण दा रूप हो जाईये
ते असी किस तरीके दे नाल कितने भ्रम दे विच बैठे हां केड़ी
क्रिया नूं अपना रखया है ऐ सारी दी सारी आवागमन दे विच
जीवात्मा नूं जन्म मरन दे गेड़ दे विच लै करके आंदी है । गुरु
साहब जप दे प्रति बिल्कुल उपदेश कर रहे ने कि असी जप
दी इक क्रिया, इक उदाहरण दे रहे ने कि जीवात्मा जेड़ी है पाठ
करदी है बाणी दा पाठ करदी है मंत्रा दा उच्चारण करदी है
किस दे नाल जुबान दे नाल हुण जुबान दे नाल उच्चारण
कीता गया है तप कीता गया है यानि के परमात्मा दा जप
कीता है परमात्मा दे प्रति कीता गया उद्म जेड़ा है कदी वी
नष्ट नहीं होंदा । इस तरीके नाल कीते गये जप या सिमरन
दे नाल परमात्मा दे इस गुण नाम दी प्राप्ति नहीं होंदी यानि
के ऐ श्रेणी वाले किथे ने ओथे ही बैठे रह गये जिस तरीके दे
नाल कुछ लफजां दे नाल इन्द्र दे नाल जाप करदे हां ते ऐ

श्रेणी और पाठ नूं पढ़न वाली श्रेणी इको ही श्रेणी है इन्हाँ नूं कुज वीं फल प्राप्त नहीं होंदा इन्हाँ दे खाली दी गल जेड़ी है अगले जन्म तक चली गई ! हुण अज तक विचार करके देख लो कि जिस विद्यार्थी ने अज दा कम कल उते सुट दिता ओ कल अज तक नहीं आया । यानि के मौत ते आ गई पर कल नहीं आया । अनंत काल तों असी जन्म मरण दे गेड़ दे विच इन्हाँ मुल्का दे विच खजल हो रहे हाँ । अज तक मुक्ति नहीं मिली, सतिगुरु नहीं मिलया, परमात्मा नहीं मिलया कारण की सी पर जप ते असी कर रहे हाँ । इन्द्री दा जप कर रहे हाँ, गल अगले जन्माँ दे विच चली गई और विचार करके देख लो काल कोई मूरख नहीं है गल अगले जन्माँ दे विच चली गई । यानि काल ने बड़ी ही सुन्दर वस्तुयाँ या करम साड़ी झाली दे विच तकसीम करने है । जिस दे नाल साडा जन्म फिर उसने खो देणा है । 84 दे गेड़ दे बाद भई सानू मनुखा जन्म मिलया इक मौका मिलया ते काल ने खोण वास्ते पूरा उद्म करना है पूरी कोशिश करनी है रुह नूं जाण नहीं देगा पारब्रह्म दे विच ते केड़ी गल है कि असी अगले जन्म पक्के करी बैठे हाँ मनुखा जन्म मिलया है ते किस तरीके दा जप कर रहे हाँ किस दा पाठ कर रहे हाँ । यानि के नाम ही है मन्त्र की है परमात्मा दा इक नाम रख करके जप लेआ उसनू जिस वक्त उच्चारण

कीता जा रहा है उस नूँ असी लिख लेआ रिकांड कर लेआ फिर
ओदी पौथी बणा लई यानि के ऐ सारा नाम ही है नाम दा ही
जप है । पर इस दा फल बहुत छोटा है इतना छोटा है कि इस
शरीर रूपी कब्र विचों जीवात्मा निकल ही नहीं सकदी । पहली
श्रेणी वालेयां नूँ कुज वी प्राप्त नहीं होंदा । कुज वी नहीं दा
भाव है कि ऐ फल प्राप्त नहीं होंदा । मिलेगा जरुर यानि के
इक मनुखा जन्म और मिल सकदा है या होर उतलियां जूनां
मिल सकदिया ने पर ओ फल नहीं मिलेगा जिस फल दे प्रति
इस चरन धूँडि दा उपदेश दिता गया है । हुण उस तों अगे
दूसरी श्रेणी है यानि के जीवात्मा पाठ करदी है अर्थ सहित उसनूँ
पूरे अर्थ मिलदे ने गीता दा पाठ कीता जा रहा है । रामायण
दा पाठ कीता जा रहा है । गुरुबाणी दा पाठ कीता जा रहा है
मंत्र जपे जा रहे ने । यानि के उन्हां दे विच जो अर्थ दिते
गये जो गुरुयां ने उपदेश दिता ओ ते जीवात्मा नूँ बोध है ।
ज्ञान है पर विचार करना है क्या ओ उसदा आचरण कर रही
है । पर नहीं ऐ जो दूसरी श्रेणी है पढ़न वालेआं दी या सुणन
वालेयां दी यानि के इस वक्त असी बैठे इस वाणी दा सरवण
कर रहे हाँ । इन्हां तुकां दा जो अर्थ है ओ साडी झोलियां दे
विच तकसीम कीता जा रहा है । असी कोई वी इक वी सत्संग
मिस नहीं कीता कोई वी देहाङ्गा नहीं है असी बाणी नहीं पढ़ी

सवेरे शाम हर पल हर घड़ी असी इस इन्द्री दे नाल इन्हां मंतरा
नूं बाणी दा जप वी करदे हां लफजां दा वी जाप करदे हां इन्हां
दे अर्थ वी सानू पता ने बड़े चतुर बड़े चालाक हां अर्थ वी सानू
मौजूद ने इतने अर्थ मौजूद ने कि गुरु साहब ते दो-ढाई घटे
दा सत्संग करके थकावट महसूस कर लैदें ने पर असी सारा
दिन ही सत्संग करदे रहिये ते सानू कोई थकावट नहीं जे होंदी
। इतने अर्थ सानू पता ने इस बाणी दे इक - 2 बाणी दे पंजा
- पंजा अर्थ इस जगत दे विच विद्वानां ने दिते ने पर केड़े अर्थ
नूं इस बाणी दे विच लगाणा है ऐदा उन्हां नूं पता नहीं । यानि
के सचखण्ड दी बाणी है सचखण्ड वाले ही अर्थ दे सकदे ने ।
सो दूसरी श्रेणी जेड़ी है बड़ी चालाक श्रेणी है । उसनूं पता है पूरे
अर्था दा ज्ञान है पूरे सत्संग विच क्या होंदा है क्यों होंदा है
और इसदा की फल है पर आचरण नहीं करदी यानि के दूसरी
श्रेणी वी पहली श्रेणी तों दस गुणा वद लाभ लै जांदी है । पर
रहदीं ओथे दी ओथे ही है जिथे पहली श्रेणी वाले विश्वास करदे
ने । उन्हां दा वासा होंदा है यानि के आवागमन दे विच । ऐ
दूसरी श्रेणी वी गर्क हो जांदी है आवागमन दे विच सानूं शरीर
वी मिलया मनुख दा, स्वस्थ वी मिलया, पूर्ण सतिगुरु वी मिल
गया, नाम वी मिल गया सतिगुरु ने आपणा रूप दे दिता, आपणे
नाल बिठा लिता उसदे बाद वी अगर जीवात्मा आवागमन दे

विच रही ते इसदा भाव है कि असी विवेकता दा इस्तेमाल नहीं
कीता । वैसे बड़े बतुर हाँ जगत दा कोई वी फैसला करदे हाँ,
कोई वी कम - धधे दा ते दस कोलों सलाह लै के विवेकता
दा इस्तेमाल करदे हाँ जेदे विच नुकसान न हो जाये । पर
जेडी क्रिया असी अपना रखी है ऐदे विच कोई विवेकता दा
कोई नाम नहीं कोई दूर - दूर तक पता नहीं । असी मूङमत
हो के इस बाणी दा पाठ कर रहे हाँ । अगर अर्थ वी मिल गये
ते आचरण नहीं कीता । हुण गुरु साहब उपदेश कर रहे ने इक
तीसरी श्रेणी होर मौजूद है इस जगत दे विच बेशक ऐ श्रेणी
बहुत छोटी है । कोई विरलेयां विचों कोई करोड़ा विचों भागा
वाला इक निकलदा है जेडा कि सबेरे शाम बाणी दा पाठ वी
नहीं करदा । न गीता नूं पढ़दा है न रामायण नूं पढ़दा है ओनूं
ते किसी राह चलदेया ने वी सुणा दिता कि सतिगुरा ने ऐ
उपदेश कीता है या कोई इक अधी तुक ओदे कन विच पै गई
उसदा अर्थ उसनूं पता चल गया । साध - संगत जी ओ आपणी
हस्ती मिटा रेहा है उस तुक दे ऊपर, उस भाव दे ऊपर, उस
अर्थ दे ऊपर, सतिगुरु जी ने जो उपदेश दे दिता जो उस भाणे
दे अन्दर रहंदा होईया उसदे ऊपर मिट रेहा है उन्हाँ ने कह
दिता भई सच है ते फिर सचों ही सच है इस्तों वट्ठा जाप कोई
नहीं इस्तों वट्ठी बाणी कोई नहीं, इस्तों वट्ठा गुर - मंतर कोई

नहीं और इस्तो वद्वा आधार कोई नहीं जेड़ा इस जीवात्मा नूं
हथ दे करके उस सचखण्ड दे विच बिठ देंदा है । हुण गुरु
साहब उपदेश करदे ने ऐ जेड़ी तीसरी श्रेणी है न जिस ने कि
आपणा आचरण बणा लेआ गुरु दे उपदेशानुसार ऐ श्रेणी जेड़ी
है पहली श्रेणी तों हजार गुणां लाभ लै करके मुक्त हो जांदी है
। संता दी जेड़ी चरन धूड़ि है न इस फल नूं प्राप्त करन दी
अधिकारी कौण है ! ऐ तीसरी श्रेणी जिस ने कि आपणा
आचरण सुधार लेआ हुण विचार करके देख लो पहली श्रेणी
वाला जेड़ा जप कर रेहा है अख बंद करके बैठा बिल्कुल मूरख
है । इक हजार साल इन्द्री दा जप करे जिस तरह कि असी
करदे हां सारे ही ओ हजार साल दा तप जेड़ा है उसदा फल
उसनूं क्या प्राप्त होईया आवागमन और इसदे मुकाबले विच
तीसरी श्रेणी वाले ने सिर्फ और सिर्फ इक साल दे विच फल
इस तों वद प्राप्त कर लेआ । यानि कि चरन धूड़ि नूं प्राप्त
करन दा अधिकारी हो गया कित्थे हजार साल दी मेहनत और
कित्थे इक साल दी मेहनत तो सतिगुरां ने जेड़ा ढाई घटे दा
उपदेश कीता है ना ओ मन दी रुचि दे मुतलक उपदेश कीता
है कि अगर मन दी रुचि इस परमात्मा दे नाम दे नाल जुड़
जाये इसनूं एकत्रित कर लये ते ऐ तेरा तोसा है राह चलण दे
विच इत्थे और ओथे तेरे कम आयेगा । यानि कि इसे ने तेनूं

छुड़ाना है इन्हाँ लफजाँ ने तेनूं नहीं छुड़ाना । लफज ते इक साधन दिते ने जिन्हाँ नूं असी पढ़ी जा रहे हाँ मंत्र बाणी कह कर के । ऐ इक साधन मात्र है इस रुचि नूं पलटण दा यानि के संसार दी रुचि असी त्याग दर्झये और इस परमात्मा दे नाम गुण जिसदे विच कि प्रकाश और आवाज है इसदे विच असी रुचि पैदा कर लईये । फिर ऐ जीवात्मा नूं सत्संगत दी धूड़, संता दी चरन धूड़ि अवश्य मिलेगी कदी हो नहीं सकदा कि न मिले ओ धूड़ मिलदी किथे है सत दी संगत विच जिथे सत प्रगट होंदा है जिथे सत प्रगट नहीं है ते उसदी धूड़ केड़ी एकत्रित करांगें झाङू लगा कर के मिट्टी ही एकत्रित होयेगी और कुज वी नहीं ते गुरु साहब बिल्कुल स्पष्ट करदे ने कि उसी वक्त जदों ऐ धूड़ि इसनूं अंतर दे विच मिलेगी । जदों ऐ जीवात्मा अंतर दे विच जांदी है ऐ नौ द्ववारियाँ दी रुचि नूं त्याग कर के दसवें द्वार परमात्मा दे उस नाम रूपी शब्द दे नाल रुचि कर - 2 के अन्दर जुड़दी है न एकत्रित होंदी है उस वक्त सतिगुरु दे नूरानी रूप दे विचों बड़ी ही सुन्दर रेशमी किरना निकलदिया ने इस जीवात्मा नूं attract करदिया ने खिचदिया ने आपणी तरफ जिस तरह मैग्नेट लोहे नूं खिचदा है आपणी तरफ उसी तरीके दे नाल ऐ जीवात्मा निमाणी दीन हो करके सतिगुरु दे चरना दे विचों जेडिया रेशमी किरना निकल रहिया ने ना उन्हाँ दा

स्नान करदी है तां स्नान दा जो भाव दिता बाणी दे विच ओ इस
स्नान दी गल कीती गई है अंतर दे उस नूरानी रूप दे उस प्रकाश
दा स्नान, उस प्रकाश दी शरण, उस प्रकाश दा आधार उस दे
स्नान दे बाद ही ऐ जीवात्मा इस काबिल बणदी है क्योंकि मन
वी इसदे नाल होंदा है उस वक्त फिर बाहर नहीं आणा चाहंदा
अज अंदर नहीं जाणा चाहंदा फिर बाहर नहीं निकलदा । तां
इसदी दवाई किथे है अंतर दे विच ओ प्रकाश है उस प्रकाश
नू ही कह करके चरन धूङ्गि संता ने पुकारेया है । बाहर दी
जेडी धूङ्गि है जेडी सत्संग दे विच सचखण्ड तों ऐ लफज दिते
जादें ने ऐ नाम है और इसदी धूङ्ग की है असी इसनूं अपना
लईये अगर अपना लवागें ते अंदर दी उस रेशमी धूङ्ग नूं प्राप्त
करन दे काबिल इस जीवात्मा नूं अवश्य बणा लवागें । अगर
इस क्रिया नूं असी नहीं अपनाया ते अज तक असी अनंत
काल तों ऐ पहली क्रिया यानि के इन्द्री जप दी अपना रखी है
बाणीया नूं पढ़दे हां । संता दे मंत्रा नूं जाप करदे हां पर उन्हां
दा फल इतना छोटा है कि सानूं आवागमन तों पार नहीं लै
जा सकदा । अज दे मजमून नूं गुरु साहब बिल्कुल स्पष्ट कर
रहे ने कि अगर असी सचमुच चाहदें हां ते आपणी रुचि नूं
पलट लईये तां रुचि दे पलटण दे नाल ही ऐ जीवात्मा
बाहरमुखी तों अन्दरमुखी हो जायेगी और अन्दरमुखी उस चरन

धूङ्गि नूं प्राप्त करन दे काबिल बण जायेगी । “संत मारगि
चलत प्रानी पतित उथरे मुचै ।” संता दे मारग ते अगर ऐ
जीवात्मा चल पवे पतित उथरे कहदें ने जेडे इस पथ तों
विचलित हो चुके ने यानि के दूर ने हुण पथ केड़ा है ! इक
पथ जांदा है परमात्मा दी तरफ इक पथ जांदा है संसार दी
तरफ । हुण मन जेड़ा है संसार दे रस्ते ते चलना पसन्द करदा
है कारण की है ! मन दी जेड़ी धातु हैना जिस धातु दा मन है
ऐ संसार दे विच जड़ चेतन लोक विच जो कुछ वी नजर आ
रेहा है मन बुद्धि और इन्द्रियां दे नाल दृष्टिगोचर है ऐ सारेया
दी धातु इक है यानि के मन दी धातु और संसार दी धातु इक
होण करके दोनां दी इक दूजे दी प्रति आसक्ति है । इक दूजे
दे प्रति प्यार है यानि के दोवें मन अगर बिख है जहर है ते
संसार अमृत किवें हो सकदा है ! संसार वी जहर है और जहर
ही जहर नूं प्यार करदा है जहर दे विच रच करके ऐ जीवात्मा
कट्ठी अमृत दा पान नहीं कर सकदी । चरन - धूङ्गि नूं प्राप्त
करन दे काबिल नहीं बण सकदी । चरन धूङ्गि ओ शुद्ध अमृत
है उस अमृत दे कुण्ड दे प्राप्त करन वास्ते ऐ जीवात्मा नूं जरुरी
गल है कि उस मारग ते चले कि जिस मारग ते चलण दा संत
उपदेश कर रहे ने अगर संता दे मारग ते असी नहीं चले उस
मारग नूं नहीं अपनाया ते जेड़ी क्रिया नूं असी अपना रखया है

ओ क्रिया बहुत छोटी है ओ सानू उस रेन दे कुण्ड तक लै जा
नहीं सकदी और साड़ा उद्धार किस तरीके नाल होयेगा । अगर
असी अपना लवागे ते अवश्य हो जायेगा । “रेन जन की लगी
मस्तकि अनिक तीरथ सुचै ।” गुरु साहब उपदेश करदे ने
अगर इस जन दी धूँड साडे मस्तक ते लग जावे ते अनेक
तीरथां दा फल सुचै यानि कि मुक्त हो जाणा मोक्ष दी प्राप्ति
साध - संगत जी थोड़ा जेआ विचार करना पयेगा कि पिछले
समें काल दे विच वेदां शास्त्रां दे विच जेझी मुक्ति या मोक्ष दी
गल कीती गई है कर्मकाण्ड दे मुतलक ओ आपणे आप दे उस
समें अनुसार सत्य है इसदे विच वी कोई शक नहीं है जैसे वी
अवतारां ने बचन कीते ऋषियां - मुनियां ने हुकम कीते आपणे
युग काल समय दे विच ओ पूर्ण उतरे ने अगर ओ पूरे नहीं
सन हो सकदे ते उन्हां नूं ऋषि - मुनि या गुरु कहण दा या
अवतार कहण दा कोई लाभ नहीं । ऐदे विच उन्हां ने जो ज्ञान
जो रस्ता उस समें दे जीवां नूं दिता उस वक्त उन्हां ने मुक्ति
प्राप्त कीती ओदे विच कोई शक नहीं पर इस वक्त जेझे उपदेश
दी गल कीती गई है ऐ बिल्कुल स्पष्ट है वेदां शास्त्रां नूं अगर
असी पढ़ लईये ते ओदे विच वी नाम दी धूँड नूं प्राप्त करन दी
गल कीती गई है ओ नाम असी किस नूं कह दिता । राम दे
नाम नूं कह दिता, कृष्ण दे नाम नूं कह दिता, नानक दे नाम नूं

ਕਹ ਦਿਤਾ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਔਰ ਆਵਾਜ ਪ੍ਰਗਟ ਸੀ ਉਨਹਾਂ ਘਟਾਂ ਦਾ ਜੋ ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਵਿਚ ਨਾਮ ਰਖਿਆ ਗਿਆ ਸੀ ਅਥੀ ਉਨਹਾਂ ਨੂੰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਕਹ ਕਰਕੇ ਸਮਝਾਦੇ ਜਾਣਦੇ ਸਾਂ ਕਿਥੋਂ ! ਕਿਥੋਂਕਿ ਅੰਤਰ ਦੇ ਵਿਚ ਤਾਕਤ ਕਮ ਕਰ ਰਹੀ ਸੀ ਪਰ ਤਾਕਤ ਤਕ ਅਥੀ ਪਹੁੰਚ ਨਹੀਂ ਸਕੇ । ਅਥੀ ਬਾਹਰ ਦੇ ਆਖਿਰੀ ਨਾਮ ਤਕ ਹੀ ਫੱਸੇ ਰਹ ਗਿਆ । ਧਾਨੀ ਕੇ ਇਕ ਢਲਢਲ ਵਿਚੋਂ ਨਿਕਲੇ ਟੂਸੇ ਦੇ ਵਿਚ ਫਸ ਗਿਆ ਤੇ ਸਾਡਾ ਤੜਾਰ ਕਿਵੇਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ । ਅਨਿਕ ਤੀਰਥ ਸੁਚੈ । ਅਨੇਕ ਤੀਰਥਾਂ ਦਾ ਫਲ ਧਾਨੀ ਕੇ ਸੁਚੇ ਹੋ ਜਾਣਾ ਮੋਕਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਜੇਡੀ ਪਿਛਲੇ ਯੁਗ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿਚ ਸੀ ਨਾ ਓ ਸਾਰੀ ਦੀ ਸਾਰੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਗਰ ਏ ਸਤਸਾਂਗ ਦੇ ਵਿਚ ਨਿਕਲੀ ਨਾਮ ਦੀ ਥੂੰਡ ਮਸਤਕ ਤੇ ਲਗ ਜਾਏ । ਧਾਨੀ ਕੇ ਜੀਵਾਤਮਾ ਨੌ ਢੁਵਾਰਾਂ ਵਿਚੋਂ ਨਿਕਲ ਕਰਕੇ ਦੱਸਕੇ ਢਾਰ ਤੱਥ ਨੂਰਾਨੀ ਰੂਪ ਦੇ ਵਿਚ ਮਿਲ ਜਾਏ ਬਿਲਕੁਲ ਤੱਥ ਦੇ ਇਕ ਭੇਖ ਹੋ ਜਾਏ ਲੋਟਪੋਟ ਹੋ ਜਾਏ ਚਰਨ ਦੀ ਧਾਨ ਕਿਰਨਾਂ ਦੀਆਂ ਉਨਹਾਂ ਕਿਰਨਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਤੇ ਏ ਸਾਨੂੰ ਤੀਰਥਾਂ ਦੇ ਭਰਮਣ ਦਾ ਫਲ ਜੇਡਾ ਸੀ ਨਾ ਮੋਕਾ, ਮੋਕਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਓ ਸਾਨੂੰ ਜੀਂਦੇ ਜੀ ਇਸ ਕਲ ਧਾਨੀ ਦੇ ਵਿਚ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ । ਪਰ ਕਦੋ ਹੋਂਦੀ ਹੈ ਜਦੋ ਤੱਥ ਮਿਟ੍ਰੀ ਦੇ ਵਿਚ ਮਿਲ ਜਾਵੇ । ਹੁਣ ਓ ਮਿਟ੍ਰੀ ਕੇਡੀ ਹੈ ! ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਦੇ ਜੇਡੀ ਅੰਤਰ ਦੇ ਵਿਚ ਮਿਲਦੀ ਹੈ । ਬਾਹਰ ਦੀ ਮਿਟ੍ਰੀ ਦੀ ਗਲ ਨਹੀਂ ਕਿਤੀ ਗੜ੍ਹ ਜਿਥੋਂ ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਂਘ ਗਿਆ ਨੇ ਤੱਥ ਮਿਟ੍ਰੀ ਨੂੰ ਅਥੀ ਚਟਿਧੇ ਧਾ ਮਤ੍ਥੇ ਤੇ ਲਾਵਾਗੇ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਮੁਕਤਿ ਮਿਲ ਜਾਏਗੀ ਐਥੀ ਮੁਕਤਿ ਇਸ ਜਗਤ ਦੇ

विच अज तक किसे नूं वी प्राप्त नहीं होई । “चरन कमल
धिआन भीतरि घटि घटहि सुआमी सुझै ।” हुण गुरु साहब
बिल्कुल स्पष्ट करदे ने चरन कमल धिआन भीतरि हुण अंतर
दा ध्यान बिल्कुल स्पष्ट है इस तुक दे विच । पहले जेडे तुका
दे अर्थ गुरु साहबां ने दिते ने उन्हां दी साक्षी है ऐ तुक कि जदो
जीवात्मा नौ द्विवारा विचों निकल के अंतर दे विच जांदी है उस
वेले नूरानी स्वरूप दे प्रगट होण दे बाद ऐ जीवात्मा चरनां दा
ध्यान करदी है चरनां दा ख्याल करदी है चरनां दी धूङ दा
ख्याल करदी है । इसी करके गुरु साहब स्पष्ट करदे ने कि
अंदर दे विच जा करके जदों ऐ जीवात्मा स्नान कर लैंदी है ते
उसनूं फिर पता चलदा है कि गुरु कौण है ! गुरु क्या हस्ती है
बाहर बैठया असी जितने मर्जी सत्संग कर लईये जितना मर्जी
केहा जाये गुरु - पारब्रह्म - ईश्वर है सतिगुरु है जितने वडे
असी उन्हां दे उद्घाटन कर लईये रस्तेयां ते बिछ जाईये पर
कोई लाभ नहीं क्यों । क्योंकि ऐ सारी मन दी चाल है मन ने
भ्रमा रखया है । पर जेडी जीवात्मा ने अंतर दे विच उस रेशमी
किरन नूं देख लेआ साथ - संगत जी उसनूं फिर कोई सत्संग
दी लोड़ नहीं कुछ समझण दी कहण दी लोड़ नहीं उसनूं फिर
पता चल जांदा है कि ईश्वर - परमात्मा - गुरु इको ही चीज
है यानि के घट - घट दे विच असी कहदें हां न ईश्वर समाया

होईया है इस तुक दक विच बिल्कुल स्पष्ट है कि घट - घट दे विच ओ गुरु नूं देखदा है । सतिगुरु नूं रमेया देखदा है क्यों ! क्योंकि सतिगुरु शब्द नाम यानि के प्रकाश है और परमात्मा दा गुण की है ओवी प्रकाश है और आवाज है कि दोनों इकों ही रूप है पर पता कदों चलदा है जदों जीवात्मा अंतर दे विच चरन कमल दा ख्याल करदी है । बाहर दे चरन कमल दे ख्याल दे नाल न ते इस अवस्था दी प्राप्ति होंदी है और नहीं ओ फल मिलदा है जिस नूं इस वक्त उपदेश कर रहे ने सतिगुरु कि घट - घट दे विच गुरु यानि कि परमात्मा रमेया होईया दिसदा है ऐ तां ही होंदा है जदों जीवात्मा अंतर दे चरन कमल दे विच आपणे ध्यान नूं ख्याल नूं पक्का करदी है । “सरनि देव अपार नानक बहुरि जमु नहीं लुझै ।” गुरु साहब उपदेश करदे ने सरनि देव सरन हो जा देव दी देव केड़ा अपार देव । गुरु नानक साहब उपदेश करदे ने हुण ऐ देवता केड़ा है । किसी देवी - देवता दी गल नहीं कीती जा रही ईत्ये देव दा भाव है प्रकाश यानि के देव दे नाल अपार लफज दा इस्तेमाल क्यों कीता गया है अपार दा भाव है जिसनूं पार नहीं पा सकदे उस तों अलग नहीं जा सकदे । उस तों दूर की है अलख अगम और अनामी असी उसनूं पहचान नहीं सकदे मन बुद्धि और इन्द्रिया दे नाल देवी - देवतेया सब दी आपणी सीमा है असी

उन्हां नूं जाण सकदे हां सूक्ष्म लोक विच सूक्ष्म चोले नाल प्रवेश कर जाईये ते ओ लखे जा सकदे ने बेशक इस चोले विच असी उन्हां नूं न लख सकिये पर ओ लखे गये ते ओ परमात्मा नहीं हो सकदे । ते अपार दी जेड़ी गल कही गर्ड है ऐथे देव दा भाव है प्रकाश । प्रकाश केड़ा अपार जिसनूं पार नहीं जा सकदे अपार प्रकाश केड़ा है ओ परमात्मा दा गुण है जिसनूं नाम केहा गया है जेदे विच इक आवाज है और आवाज दे विच इक प्रकाश है । तां गुरु साहब उपदेश करदे ने कि सरनि देव कि इस देव दी, इस प्रकाश दी शरण लै - लै । हुण ऐ प्रकाश मिलदा किथे है ! आधार ते इसने सभ नूं दे रखया है जड़ चेतन जो कुछ वी अनंत मण्डल ने । अनंत मण्डला नूं आधार देण दे बावजूद ऐ मिलदा किथे है सिर्फ मनुखे जन्म दे विच दसवें द्वार ते । ओ कहदें ने ओदी शरण लै हुण बिल्कुल स्पष्ट उपदेश है कि ऐ शरण तां ही मिलेगी जदों साडी रुचि पलटेगी । जदों साडी रुचि नौ द्वारा विचों निकलेगी दसवें द्वार ते रुचि बणेगी ताहीं जा करके असी ऐ प्रकाश दी सरनि लै सकदे हां क्योंकि दसवे द्वार दे विच ऐ प्रकाश प्रगट है अपार जिस तों पार नहीं जा सकदे तां ही ऐ जीवात्मा नूं इस काबिल बणा देंदा है कि उस अपार दे नाल मिल करके पौढ़ी दर पौढ़ी चढ़दा होईया उस जगह पहुंच जांदा है जिथों ऐ प्रकाश और

ऐ आवाज आ रही है यानि उस अकाल पुरख दी गोद विच ऐ
जीवात्मा पहुंच जांदी है इस चरन धूँडि नूं प्राप्त करके और ऐ
चरन - धूँडि ताही मिलदी है जदों इस प्रकाश दी शरण लई
जाये । इस जगत दी जितनियां वी जड़ वस्तुयां दा असी आधार
लै रखया है जगत दे विच काल दी लीला देख लो कितने
भयानक रूप दे विच जड़ वस्तुयां दे विच परमात्मा नूं प्रगट
के दिखाया जा रेहा है कितनी भयानक चाल है ऐ जीवात्मा,
मन कितना लुभायेमान है अज तक ऐ अन्दर गया नहीं उस
प्रकाश नूं देख नहीं सकया ऐ बाहर बैठा उस परमात्मा नूं तलाश
कर रेहा है और इसी दा लाभ चुक रेहा है कि जड़ लोकां दे
विच सानूं परमात्मा दे इस तरीके दे दर्शन हो रहे ने । हुण
विचार करके देख लो इन्हां दे नाल अज तक मुक्ति नहीं होई
उसने कैद करना है इक पिंजरा तैयार करना है ओ कहंदा है
हुण पिंजरे दे विच आ जाओ पिंजरा हुण तुसी जिस तरीके दा
मंगोगे उस तरीके दा तुहानू दे दिता जायेगा यानि कि ओ ब्रह्म
वी कुर्बान है आपणियां उन्हां रुहां उते जेडियां उसदे कुर्बान ने
। संसार दी आसक्ति जेडी है ओना दे ऊपर ब्रह्म जेडा है इक
सीमा तक मुक्ति वी देंदा है कुछ कल्प दी उसदे बाद बेशक
उन्हां नूं जन्म और मरन दे गेड विच आणा पैंदा है । संता दी
जेडी मुक्ति है संत जेडे प्रकाश अपार दी गल कर रहे ने ओ

ਪੂਰਣ ਮੁਕਤਿ ਦੀ ਗਲ ਕਰ ਰਹੇ ਨੇ । ਇਸ ਖੇਲ ਦੇ ਵਿਚ ਜੇਡੀ ਸਮਝਾਣ ਵਾਲੀ ਗਲ ਹੈ ਕਿ ਦੋਨੋਂ ਖਿਲਾਡੀ ਖੇਲ ਖੇਲ ਰਹੇ ਨੇ ਨਿਯਮ ਦੇ ਅਧੀਨ ਹੈ । ਪਰਮਰਤਮਾ ਰੂਪੀ ਖਿਲਾਡੀ ਇਸ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇ ਜਾਰੀ ਖੇਲ ਦੀ ਗੋਟ ਨੂੰ ਚਲਾਂਦਾ ਹੈ ਔਰ ਇਸ ਗੋਟ ਨੂੰ ਕੇਡਾ ਫਲ ਦੇਂਦਾ ਹੈ ਚਰਨ ਥੂੰਡਿ ਦਾ ਕਿ ਜਿਸਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਕੇ ਜੀਵ ਸਦਾ ਲਈ ਅਵਿਜਾਸੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਔਰ ਜੇਡਾ ਬ੍ਰਹਮ ਦਾ ਰੂਪ ਹੈ ਬ੍ਰਹਮ ਆਪਣੀ ਰੁਹਾਂ ਨੂੰ ਜੇਡੀ ਗੋਟ ਬ੍ਰਹਮ ਦੇ ਪਿਛੇ ਚਲਦੀ ਹੈ ਉਸਨੂੰ ਇਸ ਜਗਤ ਦਾ ਮਾਨ - ਸਮਾਨ, ਧੀਆਂ - ਪੁਤ੍ਰ, ਜਮੀਨ - ਜਾਧਦਾਦ, ਰਾਜੇ - ਮਹਾਰਾਜੇ ਧਾਨਿ ਸਾਰੀਆਂ ਵਸਤੁਆਂ ਦੇਂਦਾ ਹੈ ਰੀਧਿਆਂ ਸਿਧਿਆਂ ਤਕ ਓਦੇ ਚਰਨਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਲਿਆ ਦੇਂਦਾ ਹੈ । ਓਦੀ ਜੁਬਾਨ ਤੋਂ ਕਾਈ ਲਫ਼ਜ਼ ਨਿਕਲਦਾ ਹੈ ਤੇ ਸਾਰਾ ਸੰਸਾਰ ਓਦੇ ਅਗੇ ਝੁਕ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਏ ਕਿ ਹੈ ਸਾਰੀ ਰੀਧਿ ਸਿਧਿਆਂ ਦੀ ਤਾਕਤਾਂ ਨੇ ਔਰ ਕਾਲ ਦੇ ਬੜੇ ਸੁਨਦਰ - 2 ਬਣਾਯੇ ਗਏ ਪਿੰਜਰੇ ਨੇ ਔਰ ਅਖੀ ਸਾਰੇ ਦੇ ਸਾਰੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਹੀ ਪਿੰਜਰੇਆਂ ਨੂੰ ਪਸੱਨਦ ਕਰਦੇ ਹਾਂ । ਸਤਿਗੁਰ ਦੇ ਦਿਤੇ ਉਸ ਪਿੰਜਰੇ ਵਿਚੋਂ ਨਿਕਲਣ ਵਾਲੀ ਦਾਤ ਉਸ ਚਰਨ ਥੂੰਡਿ ਨੂੰ ਅਖੀ ਲੈਣਾ ਪਸੱਨਦ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ ਔਰ ਜੇਡੇ ਸਤਿਗੁਰ ਵਾਲੇ ਪਾਸੇ ਜਾਦੇ ਨੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਤਰਫ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਤਿਗੁਰ ਸਦਾ ਲਈ ਅਮਰ ਬਣਾ ਦੇਂਦੇ ਨੇ ਧਾਨਿ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਜੀਵਾਤਮਾ ਨੂੰ ਇਸ ਲੋਕ ਵਿਚ ਜਨਮ ਔਰ ਮਰਨ ਦੇ ਗੇਡ ਦੇ ਵਿਚ ਫਿਰ ਨਹੀਂ ਆਣਾ ਪੈਂਦਾ । “ਤਾਕਾ ਦਰਸੁ ਪਾਈਐ ਕਡਭਾਗੀ । ਜਾ ਕਿ ਰਾਮਜਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ।” ਹੁਣ ਰਾਮ ਨਾਮ ਦੇ ਨਾਲ ਜਿਸਦੀ ਲਿਵ ਲਗੀ ਹੈ ਧਾਨਿ ਕੇ ਰਾਮ

कोई लफज नहीं है । जो उपदेश गुरु साहबां ने कीता है आवाज और प्रकाश वाला ऐ है राम दा नाम जिसदी लिव लग गई । लिव किसदी लग गई जेडा नौ छवारां विचों निकल गया । जेडा नौ छवारां विचों निकल के उस परमात्मा दे नाल मिल गया ओ परमात्मा ही हो गया । यानि के जिस घट दे विच परमात्मा प्रगट है उसी दा रूप है ते गुरु साहब उपदेश करदे ने कि उसदा दर्शन किसी वडु भागा वाले नूं मिलदा है । हुण गुरु साहबां ने पहले जेडी तुक लई सी “छिठै मुकति न होवई” उसदी वी साक्षी हो गई बाणी स्पष्ट करदी है कि देखण दे नाल मुक्ति नहीं ऐ केड़े देखण दी मुक्ति दी गल कर रहे ने वडभागी दर्शन केड़े ने अंतर दे दर्शन । अंतर दे विच जिसने इस जन नूं प्राप्त कर लेआ जिस दी लिव उस परमात्मा दे नाल लगी है उस प्रकाश दा ही रूप हो चुका है ओ किसी विरले करोड़ां अरबां दे विच किसी भागा वाले नूं ही प्राप्त होदें ने ऐसे दर्शन । क्योंकि ओ दर्शन मुक्ति दा दाता ने बाहर दा दर्शन मुक्ति दा दाता नहीं है ओ रस्ते दा दाता है ओ सानूं रस्ता दे सकदा है और जेडी जीवात्मा रस्ते ते चलदी है ओ जरुर अंतर दे दर्शन करके सदा लई मुक्त हो सकदी है । “जाकै हरि वसिआ मन माही । ता कउ दुखु सुपनै भी नाही ।” जिस दा मन इसदे नाल लग गया गुरु दे नाल लग गया परमात्मा दे नाल लग गया

कहदें ने उसनूं दुखु सुपनै भी नाही । हुण इस सुपने नूं समझाणा
 है कि इस जगत दे विच जो कुछ भी सानूं नजर आ रेहा है ।
 है ते सुपना पर असी उसनूं सच समझ करके बैठे हां । हुण ऐ
 सच समझ के बैठे हां इसी करके असी दुखी हां गुरु साहब
 कहदें ने फिर उसनूं दुख नहीं लगदा दुख किसनूं नहीं लगदा
 सपने दे अन्दर सानूं कोई राज पाट मिलया है । कोई ऐकसीडेंट
 हो गया कोई तीर साडी छाती दे विच लग गया बड़े तड़फ रहे
 हां खून निकल रेहा है हुण ऐ दुख सानूं बर्दाश्त नहीं हो रेहा
 और अगर असी इस दुख तों बचणा चाहदें हां ते सपना टुट
 जाये । यानि सपने तों निकल जाईये दुख दूर हो जायेगा क्यों
 ! क्योंकि ओते सपना सीणा सपने दा दुख है और उठदे ही दूर
 हो जायेगा उसे तरीके दे नाल इस तुक दे विच स्पष्ट है कि
 जेड़ी जीवात्मा जगत दे विच जाग गई । इस वक्त असी अखां
 दे नाल ते जग रहे हां रुहानियत तौर ते गुरु साहब उपदेश कर
 रहे ने कि सारे ही सुते बैठे हां । ब्रह्म मूरत हो चुका है मनुखा
 जन्म मिल चुका है पर असी सारे सुते बैठे हां और सुते जेड़े ने
 ओ दुख दे भागीदार ने इस जगत दे विच जो कुछ वी हो रेहा
 है कोई सानूं वस्तु मिल रही है कोई दूर जा रही है सम्बन्ध
 मिल रहे ने सम्बन्ध विछुड़ रहे ने । “संजोगु विजोगु दुइ कर
 चलावहि लेखे आवहि भाग ।” यानि कि लेखे अनुसार संसार

दा कार - व्यवहार चल रेहा है मिल रहे और विछङ्गन दा दुख जेड़ा है सानूं मिल रेहा है न अगर असी इस दुख तों बचणा चाहदें हाँ ते गुरु साहब कहदें ने सपने दा दुख नहीं इस सपने नूं तोड़ लै । यानि के इस रुचि नूं तोड़ लै उस परमात्मा दे नाल रुचि नूं पैदा कर लै और सपना तेरा ट्रुट जायेगा और तूं इस दुख तों बच जायेगा “सरब निधान राखे जन माहि । ताकै सगि किलविखु दुखु जाहि ।” उसदी संगत किलविखु दी संगत दे नाल पाप कटे जादें ने केढ़ी संगत दे नाल जिस अन्दर उस परमात्मा ने निधान रख दिते ने निधान यानि खजाने । खजाने केड़े रख दिते ! जड़ वस्तु और सम्बन्धां दे खजाने दी गल नहीं कीती जा रही । नाम निधान है नाम नूं निधान कहा है यानि के अमृत नाम निधान है । अमृत किथे है नाम दे विच नाम दा खजाना “नौ निधि अमृत प्रभ का नाउ ।” नौ निधियां और अठारह सिधियां । ऐ खजाने किथे ने नाम दे अन्दर ने नाम केड़ा कोई लफज नहीं जिसनूं असी सवेर शाम रटी जा रहे अख बंद कर या अख खोल के बाणी पढ़ी जा रहे हाँ बेशक ऐ नाम है इस नाम दी गल नहीं कर रहे इसदे अन्दर ओ खजाना नहीं है । इसदे अन्दर सिर्फ रस्ता है । रस्ते ते चलना जीवात्मा दा आपणे घर दा कम है । परमात्मा ने खजाना रख दिता जिस घट दे अन्दर ओ है प्रकाश और आवाज जिस घट दे

अन्दर प्रगट हो गई उसदी किलबिखु दी संगत जेड़ी है पापा नूं
कट देंदी है । किलबिखु दी संगत केड़ी है ! सतिगुरां दा आपा
सत्संग सुणदे हां गुरु हाजिर होंदे ने पर अज तक ते घटेयां ही
सत्संग सुणन दे बाद वी साडे ते पाप कटे नहीं जे साडे ते
जन्म ही पक्के हो रहे ने फिर बाणी क्या कह रही है ! झूठ कह
रही है झूठा ओ जो न विचारे । बाकी बाणी झूठ नहीं कहदीं
फिर केड़ी संगत ! अंतर दी संगत । जिने इक घड़ी दी वी संगत
पारब्रह्म दे पूर्ण सतिगुरु दे शब्द रूप दी संगत कर ली ना
“निमखु घड़ी सिमरत जित छूटे ।” यानि के इक घड़ी दा
सिमरन केड़ा है ओ शब्द जेड़ा सतिगुरु पारब्रह्म दे विच
प्रदर्शित करदे ने ओदे जा करके जीवात्मा नूं पता चलदा है
कि गुरु यानि के शब्द गुरु दोनों इक ही चीज ने ओ सारे
चक्करां विचों यानि के लिंग भेद विचों निकल जांदा है तिनों
आवरणां विचों निकल जांदा है । सिर्फ प्रकाश और आवाज ही
रह जांदी है और ओ ही परमात्मा दा गुण है ओ ही गुरु है ओही
ऐ जीवात्मा है सारेयां ने मिल कर के ऐ सारा परिवार इकट्ठा हो
करके इक हो जांदा है यानि के उस संगत दी गल किती गई
है । यानि कि किलबिखु दी संगत जेड़ी है उस जन दी ऐ
जीवात्मा दे सारे जन्म - मरन दे पाप जेड़े ने ओ मैल नूं धौ
देंदी है । “जन की महिमा कथी न जाई । पारब्रह्मु जनु रहिआ

समाई ।” गुरु साहब स्पष्ट करदे ने उस जन दे अन्दर ओ
 परमात्मा पारब्रह्म - ईश्वर - सतिगुरु प्रगट हो चुका है उस
 घट दे अन्दर । असी घट दे अन्दर ही फंस गये उन्हां दे आकार
 दी तस्वीर लै आये थूपबती दे दिती मूर्ख दे मूर्ख ही रह गये ।
 उस प्रकाश नूँ प्राप्त करन वास्ते उस प्रकाश जिने ओ रूप लेआ
 उस घट दे विच आ करके उसने दस्या कि मैं क्या हां यानि
 के नाम क्या है प्रकाश और आवाज है उसनूँ प्राप्त करना है ।
 ते गुरु साहब कहदें ने कि जिस घट दे अन्दर ऐ प्रगट हो गया
 उस दी महिमा गाई नहीं जा सकदी यानि के महिमा केरदी गाई
 जा सकदी है ऐ जेडी मन बुद्धि और इन्द्रियां तक सीमित है
 और सीमित वस्तु ही सीमित दे गुण गा सकदी है अपार या
 असीम दे गुण सीमित ने नाल किस तरीके दे नाल गये जा
 सकदे ने यानि के जेडी जीवात्मा अंतर दे विच (दस्वें द्वार
 नहीं पारब्रह्म दी गल कीती गई है) पारब्रह्म पहुंच जांदी है
 उस दी महीमा फिर गाई नहीं जा सकदी क्यों ! क्योंकि ओ
 अपार हो जांदी है अलख अगम और अनामी दा रूप हो करके
 इन्हां मन बुद्धि और इन्द्रियां दी सीमा तों परे चली जांदी है ।
 असी चाह करके वी इन्हां लफजां दे नाल ओदे गुणां नूँ गा
 नहीं सकदे । “करि किरपा प्रभ बिनउ सुनीजै । दास की धूरि
 नानक कउ दीजै ।” “दास की धूरि नानक कउ दीजै ।” साथ

- संगत जी विचार करो ऐदे विच कितना सुन्दर भेद रखया है। “दास की धूरि नानक कउ दीजै ।” नानक दी धूड़ ते जड़ चेतन लोक अनंत ब्रह्मण्ड ते सरियां नूं लोड़ है ओ नानक दी धूड़ दी याचना कर रहे ने । ओ उपदेश कर रहे ने असल दे विच ऐ बाणी है गुरु अर्जुन देव पातशाह दी और गुरु अर्जुन देव पातशाह नानक लफज दा इस्तेमाल करके नानक नूं दीन नहीं बणा रहे। नानक दे नाम दे ऊपर उपदेश कीता जा रेहा है। गुरु अर्जुन देव पातशाह इस शब्द दे विच उपदेश करदे ने कि ओ धूड़ दी इतनी कीमत हो जांदी है यानि के पारब्रह्म ईश्वर ही, उस दा रूप हो जांदा है और दास जेड़ा अंतर दे विच उस प्रकाश नूं प्राप्त करके उसदा रूप हो जांदा है तां उस दी धूड़ जेड़ी है सारे जगत नूं लोड़ है ते तूं वी उस धूड़ दी याचना कर निमाणा हो करके दीन हो करके उस अकाल पुरुख दे अगे बेनती कर जिथे और वस्तुयां दी बेनती करदा है ओथे उस परमात्मा दी इस धूड़ नूं यानि के दास दी धूड़ नूं संत - सतिगुरु दी धूड़ि नूं ऐ धूड़ साडियां झोलियां विच पवे साडे मस्तक ते लगे इसदी याचना कर । ओ असी अर्थ कहदें हां कि गुरु नानक साहब धूड़ नूं मंग रहे ने कितने बडे मूर्ख हां । हुण साथ - संगत जी विचार करके देखो (अंधा) अज्ञा भाडे नहीं तोड़ेगा ते क्या करेगा । आपा सारे ही अज्ञे हां भाडे ही तोड़न विच लगे

होये हां । अखां वाला कौण है ओ संत - सतिगुरु है और सतिगुरु ही इस बाणी दा अर्थ दे सकदा है सचखण्ड दी बाणी नूं इन्हां तिनां लोकां दे विच कोई वी नहीं दे सकदा । सचखण्ड वाले आप ही देण ते तां ही सानूं ऐ बाणी समझ आ सकदी है । ते नानक दी धूड़ि सारी जगत लोड़दी है और ऐ दास जेड़ा है नानक दा ही रूप है और साडे सरियां दा फर्ज बणदा है असी अन्ने इस जगत दे विच भ्रमण रहे हां कि उस धूड़ नूं प्राप्त करके आपणी जीवात्मा दा उद्धार कर लईये इसनूं सदा लई अविनाशी बणा लईये । “दुख विचि जमै दुख मरै दुख विचि कार कर्माई ।” कहदें ने इस शब्द दे विच स्पष्ट है । गुरु अमरदास जी स्पष्ट कर रहे ने कि जेड़े इस नाम तो दूर ने जेड़े इस धूड़ नूं प्राप्त नहीं कर सके या नहीं करना चाहदें उन्हां नूं की होंदा ! उन्हां दे नाल की वापरदा है ओ जीवात्मा जेड़ी है “दुख विचि जमै दुख मरै” यानि जन्म मरन दा दुख केड़ा है जीवात्मा नूं इक पिंजरे विचों कड़ के दुऐ पिंजरे विच पाईया जांदा है । दुऐ विचों तीसरे विच पाईया जांदा है पिंजरा की है ऐ मौत दा पिंजरा है ऐ निश्चित सीमा तक पिंजरा सानूं मिलदा है । मन दा पिंजरा, तन दा पिंजरा हर जीवात्मा दे नाल लगा होया है और ऐदे विचों बार - 2 कडणा और बार दूसरे पिंज विच पाणा ऐ है उन्हां जीवात्मा दा हर्शर जेड़ी इस चरन - धूड़ि

नूं प्राप्त नहीं करदी । “गरभ जोनी विचि कदे न निकलै बिसठा
माहि समाई ।” हुण बिसठा केड़ी गन्दगी है ऐ जगत नूं गुरु
साहब बिसठा कह रहे ने कि गन्द है गन्द क्यों है ! क्योंकि ऐ
खत्म हो जाणा है इस करके इसनूं कूड़ या बिसठा कह रहे ने
। हुण इस बिसठा नूं विचार करके देखो आपणे घर दे विच
जदों असी झाड़ू ला के गंद इकट्ठा करदे हाँ । सब्जियां नूं फूटा
नूं कटदे हाँ जेड़ा गन्द निकलदा है उसनूं असी वगा के बाहर
सुटदे हाँ पर इस जगत नूं ही गुरु साहब कूड़ा कह रहे ने, गन्द
कह रहे ने असी इन्हाँ नूं छाती दे नाल लगादें हाँ । धीया
- पुत्रा दे नाल साड़ी कितनी ममता है कितना प्यार है असी उन्हाँ
नूं छाती दे नाल लगा करके रखदे हाँ बच्चे दा शरीर जरा कुछ
तप जाये ते सारी रात ओदे सिरहाने बैठ के जाग के ही कट
देंदे हाँ कितना दुख लगदा है सानू ममता है । असी छोड़ नहीं
सकदे यानि के ऐ सारी बिसठा जेड़ी है असी छाती नाल लगाई
है असी चट रहे हाँ चटदे होये (किस तरीके नाल मा आपणे
बच्चे नूं चट - चट के पालदी है यानि के बिसठा नूं चट रहे
हाँ ते गुरु साहब कहदें ने “बिसठा माहि समाई ।” बिसठा दे
विच समायेगा क्यों ! क्योंकि इसदे नाल तेरे जन्म पक्के हो
रहे ने अज ऐ तेरे कोलों परवरिश करा रहे ने कल तूं इन्हाँ
कोलों परवरिश कराण वास्ते पैदा होयेगा यानि के सिलसिला

अनंत काल तों चलदा आ रेहा है । कर्दी ओ साड़ी सेवाकर रहे ने और कर्दी असी इन्हाँ दी सेवा कर रहे हाँ पर असी चरन - धूङ्गि नूं प्राप्त करन दे काबिल नहीं बण सके न ओदे प्रति साड़ी रुचि है ते ऐ जीवात्मा दा हर्शर की होयेगा आवागमन यानि कि बिसठा दे विच ही पैदा होयेगी बिसठा दे विच ही समायेगी । “**धिंगु धिंगु मनमुखि जन्म गवाइआ ।**” धिंगु कहदें ने इक हजार लानत यानि कि दो वारी धिंगु दो हजार लानता भेज रहे ने उन मनुखे जन्म दी जीवात्मा वास्ते सतिगुरु उन्हाँ दीआं झोलियाँ विच तकसीम कर रहे ने जिन्हाँ ने आपणे जन्म गवां लेआ मनमुखी रूप विच । यानि के मन दे हुकम दे विच आ करके आपणे जन्म नूं गवाइआ हुकम विच संसार दे कार - व्यवहार नूं अपना लेआ । इस संसार दे विच जो कुछ वी असी कर रहे हाँ मन दे हुकम दे नाल कर रहे हाँ और जेडी प्राण शक्ति सानू मिली है स्वासा दी पूंजी मिली है ओ असी मन दे ऊपर । मन की है ओ ब्रह्म दा रूप है ओदा अंश है ओदे ऊपर कुर्बान कर रहे हाँ जिन्हाँ ने आपणी हस्ती ब्रह्म दे ऊपर कुर्बान कर लिती उन्हाँ ने आपणा मनुखा जन्म वी गवां लेआ । ते गुरु साहब कहदें ने धिंग है धिंग यानि के दो हजार लानत है जिन्हाँ ने 84 लख जामेया विचों निकल करके इस मनुखे जन्म नूं वी हथों गवां लंआ । आपा सारे ही जुआरी है जदों वी सानू

मनुखा जन्म मिलदा है असी ऐनूं जुओ दे दावं ते लगा देंदे हां
यानि के ब्रह्म नूं भेंट कर देंदे हां समझी बैठे हां कि असी
बैकुंठ जावागें मुक्ति प्राप्त करागें पर मरन दे बाद.....

क्रमशः.....